रिकॉर्डः– कौन आया मेरे..... ओमशान्ति। ये है बच्चों की याद अपने सुख दाता लिए। यूँ तो सभी जानते हैं कि ईश्वर सभी का कल्याणकारी है, पतितों को पावन करने वाला है। वो कल्याणकारी किसका अकल्याण नहीं करते अर्थात् दुख नहीं देते। वास्तव में सारी सृष्टि को सुख देने वाला एक ही है। उसको ही पतित–पावन कहा जाता है। जब मनुष्य तमोप्रधान पतित हो जाते तब खुद उनको आना पड़ता है। भगत भी जानते हैं कि भगवान को आना है ज़रूर। वो पतित–पावन है; परन्तु फिर अपन को पतित समझते नहीं। बाप बैठ समझाते हैं– देखो बच्चे, ऊँच ते ऊँच भगवान एक गाया हुआ है, उनको ही जन्म–मरण रहित परमपिता प० गाया हुआ है; परन्तु उनको अजन्मा नहीं कहेंगे; क्योंकि उनकी शिव जयंती मनाते हैं। शिवरात्रि भी उनकी मनाते हैं, ज़रूर वो आए हैं। अन्य जो भी होकर गए हैं, चाहे सूक्ष्मवतन वासी ब्रह्मा अथवा विष्णु, उन सभी से ऊँच है शिवबाबा। फिर सेकेण्ड नम्बर में शंकर को रखेंगे। इसलिए मनुष्य शिव और शंकर को मिलाए देते हैं। अब बाप समझाते हैं कि ऊँच ते ऊँच है शिव, फिर सेकेण्ड नम्बर में ऊँचा मर्तबा है शंकर का; क्योंकि फिर भी सूक्ष्म शरीरधारी है। बाकी ब्रह्मा और विष्णु वो तो साकार रूप धारण करते हैं। ब्रह्मा की रात, ब्रह्मा का दिन गाया जाता है। जब ब्रह्मा का दिन है तो विष्णु के दो रूप ल०ना० से राज्य करते हैं। तो वो ब्रह्मा और विष्णु भी जन्म–मरण में आते हैं, शंकर नहीं आते। तो शंकर जैसे प्लेस में आ गया। फर्स्ट शिव प्लेस में शंकर। तुम बच्चे जानते हो, ब्रह्मा, विष्णु भी नीचे उतरते जाते हैं। आखिर कब्रदाखिल ज़रूर होने हैं। बाप परिस्तानी बनाते हैं, माया फिर कब्रस्तानी बनाती है। तो ऊँच ते ऊँच भगवान है एक शिव। उनकी ही ऊँची मत है। इसलिए उसको श्रीमत कहा जाता है। शिव मत अथवा रुद्र मत। वास्तव में ये ज्ञान तो बड़ा सहज है; जैसे खेल निकला है अणपढ़ और चुप रहूँगी। अंत में ऐसा ही होना है। चुप रहना है, सिर्फ याद में रहना है। रात को बहुत अच्छी याद रह सकती है। वो तो एक बाप ही सभी को सुख देने वाला है। देवी–देवताओं को भी वो सुख देते हैं, फिर वो भी नीचे उतरते जाते हैं। ल०ना०, सीता–राम जो भी आते हैं सभी नीचे उतरते जाते हैं। सभी को पावन बनाने वाला वो एक है, जो परमधाम में रहते हैं। बाकी तो सभी को सतो से रजो–तमो में आना ही है। इसलिए उनमें से कोई की भी जयंती मनाने से फायदा नहीं। ऊँच ते ऊँच कल्याणकारी एक को ही गाया जाएगा। ब्रह्मा, विष्णु भी कल्याणकारी नहीं बनते। एक ही बाप कौड़ी तुल्य से हीरे तुल्य बनाते हैं; जैसे अब तुम बन रहे हो। वो सारी सृष्टि का कल्याणकारी है। माया सभी का अकल्याण करती है। बाप सभी को सतोप्रधान, हीरे तुल्य बनाता है। फिर सभी को कौड़ी तुल्य बनना ही है। नम्बरवार नीचे उतरना ही है। तो कल्याणकारी एक शिव। शंकर को भी नहीं कहेंगे। वो फिर भी प्लेस में है। तो उन्होंने मिलाए एक कर दिया है। बाकी तो उनपर भी कलंक लगाए हैं– पार्वती पर मोहित हुआ, धतुरा खाया आदि। ऐसी बातें हैं नहीं। वो अक–धतुरे फिर शिव पर चढ़ाते हैं, उनके लिए ही कहते, पत्थर–भित्तर में है। शंकर लिए ऐसे थोड़े ही कहेंगे। ऐसे नहीं, शिव–शंकर सर्वव्यापी कहेंगे। प० अलग है, शिव का चित्र दूसरा, शंकर का अलग। वो निराकार, वो आकारी। दोनों एक कैसे हो सकते? तो बाप बच्चों को समझाते हैं, पतित–पावन मैं एक हूँ, और सभी पावन बनते हैं। एक की ही महा शिवरात्रि, महा शिवजयंती मनाई जाती है। महा कहा जाता है ऊँच को। यह तो बच्चे समझ सकते हैं। बाप अपनी महिमा तो नहीं करेंगे। बच्चे बाप की महिमा करते हैं। तो बाप जैसा कल्याणकारी और नहीं। फिर माया अकल्याण करती है। जन्म–मरण में आने से सभी को नीचे उतरना ही है। 16 कला से 14 कला में ज़रूर आना है। जन्म ब जन्म

..... फिर दिन–प्रतिदिन उतरते जाते हैं। एकदम .... आठ जन्म लगते हैं। आत्माएँ सतोप्रधान से रजो, तमो में आती–जाती हैं। नाम–रूप, देश–काल बदलता जाता है। तो देवी–देवताओं की पहली सम्पूर्ण स्टेज की बैठ भक्ति करते हैं; जैसे ल०ना० की अब तक भक्ति करते रहते हैं, नहीं तो वो तो कितना डिग्रेड हो गए। अब तो वो अंतिम जन्म में घोर अंधियारे में हैं। इन बातों पर विचार–सागर–मंथन करने वाले अच्छी रीत समझाए सकेंगे। तो हीरे जैसा पावन बनाना एक का काम है। पावन बनने से आत्मा सतोप्रधान जन्म लेती है। इसलिए उनकी भी मत गाई हुई है। श्रीमत व्यास की नहीं गाई हुई है। गीता में है श्रीमत भगवानुवाच; परन्तु नाम बदलने से सारी खंडन हो गई है। तो और सभी है मनुष्य मत। तुमको मिलती है श्रेष्ठ मत, जिससे तुम राजाओं का राजा बनते हो। बाकी मनुष्य मत के शास्त्र पढ़ते–2 तो दुर्गति को पहुँच गए। भक्ति माना दुर्गति। दुर्गति होने में भी आधा कल्प लगता है। सद्गति का सुख भी आधा कल्प चलता है। धीरे–2 कलाएँ कमती होती जाती हैं। बाप तो पतितों को ऊँच ते ऊँच बनाते हैं; इसलिए शिवबाबा हीरे तुल्य है। ऐसे बाप को कितना याद करना पड़े। दिन में भल कर्म करना पड़ता है; परन्तु रात को तो फुर्सत है। इसमें तो कमाई है, तो थकावट नहीं भासती। शिवबाबा और अपने पद को याद करेंगे तो खुशी होगी। बाबा भी कहते हैं, भल कितना भी अणपढ़ हो, न वेद–शास्त्र, न राजसी विद्या पढ़ी हो, तो भी याद करना तो सहज है। मंत्र तो बड़ा सहज है। और गुरु तो अपना मंत्र देते हैं। इसके मंत्र में तो सारी बादशाही की प्राप्ति है। मनमनाभव, मद्याजीभव। मुझे याद करो और मर्तबे को याद करो। पावन बनने लिए मुझे याद करो और मर्तबे के लिए सुखधाम को याद करो और पवित्र बनो, बस। दिन को बिज़ी रहते हो तो .....। भल बिल्कुल अणपढ़ हो। जैसे कोई नहीं पढ़ता है तो कहते हैं, ये पत्थरबुद्धि है। ऐसे पत्थर बुद्धि को ..... पढ़ाई में तो हिसाब, हिस्ट्री–जॉग्राफी बहुत याद करनी पड़ती है। ..... हिस्ट्री–जॉग्राफी तो बड़ी सहज है, कैसे सूर्यवंशी–चंद्रवंशी बनते हैं। आदि तो सुख को .....है जो माँ–बाप का वर्सा मिलता है। समझाना भी बड़ा सहज है। शिव का चित्र ले जाकर समझावें कि इस बाप और इसके वर्से स्वर्ग को याद करो। वो शास्त्र पढ़े हुए तो सर्वव्यापी के ज्ञान में फँसे हुए हैं; परन्तु सर्वव्यापी से वर्सा पाने लिए पुरुषार्थ नहीं कर सकते। बाप का तो फरमान है, मुझे और मेरे वर्से को याद करो, बस। दिन–प्रतिदिन पुरुषार्थ सहज होता जाता है। भल कोई ग..... हो, वैश्या हो, वो भी समझ सकती है। इन चित्रों में और सहज है, नहीं तो मुनष्य मूँझते हैं, ये किसको प० कहते हैं। यहाँ चित्र तो सभी हैं। ये कृष्ण देखो कहते हैं, मैं अब नर्क को लात मार स्वर्ग में जा रहा हूँ। भारत में चित्र तो ढेर हैं। तेरे ये मु(ख्य) सैकरीन निकले हैं अर्थ सहित। इनसे बहुतों का कल्याण होगा। बड़े प्रेम से बैठो। इन चित्रों को लेकर सर्विस पर निकलो तो बहुत सर्विस भी हो। अपना खर्चा भी निकाल सकते हो, नहीं तो यह गवर्मेन्ट बैठी है। वो गवर्मेन्ट तो कितना कर्जा लेती है। कर्जा को मर्ज कहा जाता है। बाबा थोड़ा लेते हैं तो झट साक्षात्कार कराए देते हैं। मनुष्य जानते हैं, ईश्वर अर्थ चावल मुट्ठी देने से महल मिलते हैं। बाबा ब्याज बहुत देते हैं। कौड़ी बदले हीरा देते हैं। ऐसे बाबा को जितना याद करेंगे उतना रत्नों से झोली भरेंगे। भक्तिमार्ग में भी दाता है; परन्तु उन्हों को अल्फ काल लिए देता हूँ। उनको बेहद का सुख देता है। भक्तिमार्ग में तो थोड़ा ईश्वर अर्थ करते, बाकी बच्चों लिए (इ)कट्ठा करते हैं। इसलिए पूरा सरेंडर होना है। हम उनके बन गए तो हमारी वो ही संभाल करेंगे। ऐसा भी नहीं, जैसी हूँ, आपकी हूँ; परन्तु गुलगुल बनने पुरुषार्थ भी करना है। पुरुषार्थ पर सारा पद का मदार है। .....पद के लिए तो और ही सहज है। पढ़े–लिखे तो माथा खपाते हैं। बाप तो बड़ा सहज समझाते हैं ..... और क्या समझाएँगे। बस, चुप रहो, अनपढ़ रहो और बाप को और वर्से को याद करो। ..... पत्थरबुद्धि भी समझ जाए, तब तो भोलानाथ गाया हुआ है। अच्छा, गुडमॉर्निंग। ॐ